# भगवत् कृपा

# THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

| | | |
|---|---|---|
| वर्ष–15, अंक–11<br>गुरुवार, 26 नवं.' 92 | सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी<br>नवम्बर, 1992 | वार्षिक चन्दा–30.00<br>प्रति अंक : 3.00 |


## अमृतसेतु

[हम सब के प्यारे प्रभु प.पू. काकाजी का अमृत महोत्सव (75वीं जन्म जयंती) का महामंगलकारी वर्ष–'1993' आ रहा है.... सर्व गुणातीत स्वरूपों की छत्र-छाया में दिल्ली में 3rd Feb. के दिन-वह अमृतपर्व मंदिर में मूर्तिप्रतिष्ठा के साथ-साथ मनायेंगे। हमारे भाग्य का तो पार नहीं कि रोम-रोम में भगवान प्रकटाये परम पवित्र पुरुष गरजू बनकर हमारे जीवन में आ गये....हमें अपनी गोद दी और उनके संग जीवन जीये !!...कैसे ऋण चुका भी पायेंगे इनका?

पू. काकाजी के निम्नलिखित दो आंशिक पत्रों से ही स्पष्ट होता है कि हमें कैसी भव्य प्राप्ति हुई है....और इनके संबंध में आने के बाद हमें क्या करना है? और इससे भी अधिक–कैसी कल्पना से परे की प्रीति होगी। हम सबसे उनकी? कितना अपना माना होगा हमें–जो ऐसा सचोट व स्पष्ट मार्गदर्शन हमारे लिए खुला रख दिया कि आज भी यदि करने लग जायें तो परम सुखी हो जायें व देह रहते हुए अक्षरधाम का सुख-शांति आनंद प्राप्त करें.....

आईये, हम सब मिलकर इस रहस्य का मनन चिंतन करके समझने का प्रयास करें। इन वाक्यों को अपने जीवन का आधार बना लें ताकि 'अमृत महोत्सव' तक में प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों हमारी सब कसर टाल कर हमारी साधना की पूर्णाहुति करा देवें....यही अंतर की आरजु.....]

❑ .....मुझे तो
पू.बापा ने अनुपम ही पसंदगी में चुना था,
सो,
सर्वांगी विकास में और सर्वोच्च ब्रह्मीस्थिति में
तकलीफें बाधारूप नहीं बनी
और
**मूल रहस्यों** गौण नहीं हुए–
अक्षरपुरुषोत्तम उपासना
व
जीव को ब्रह्मरूप करके परब्रह्म में जोड़ने के मूल उद्देश्य में सहज स्थिति व सिद्धि पू. बापा ने दे दी.....
जिससे
सभी भूमिकाओं में अखंड शांति और आनंद रहा....

स्वीट्जरलैंड, 15-7-'77

❑ गुरु बहुत होते हैं,
परन्तु
सद्गुरु कम।
और
सच्चा सद्गुरु तो शायद ही मिले
और
मिल भी जाये तो–
उसके जोग में रहना कठिन।
यदि रहें भी, तो–
अखंड दिव्यभाव रखना कठिन।
शब्द द्वारा परमात्मा के स्वरूप के ज्ञान का उपदेश करे वह गुरु।
सभी में परमात्मा का दर्शन कराये वह सद्गुरु।
वह भी रखें तो–
स्वभाव टाल कर टिकना कठिन।
वह भी कर लें तो–
उसकी अनुवृत्ति में रहना कठिन।
वह भी हो जाये, तो–
उसके अभिप्राय की भक्ति करनी कठिन।
और
वह भी हो, पर–
भिन्न-भिन्न प्रकार के–भिन्न रुचि वाले मुक्तों के साथ
**दिव्यभाव ही रखकर–साधुता रखकर**
सरलता वर्तना–सर्वोत्तम स्थिति है।
और तब–
पूर्णता ही प्रगटे
और
Final stage सिद्ध हुई मानी जाये।
तो,
यह **एकता व समता** दृढ़ करते जाना।
दूसरा क्या कर रहा है?
वह
जरा भी नज़र में नहीं लेना।
हमें
प्रभु को याद करके
उन्हें ही सब करने देना है।

शिकागो, 12-5-'-77

**–प.पू. काकाजी महाराज**

ब्रह्मप्रवाह

# ( अ ) कृपा और दृष्टि

अनंत जन्मों के पुण्य उदय होते हैं, तब सच्चे सत्पुरुष मिलते हैं और उनका सम्पर्क होता है। मनुष्य बुद्धि से नापने पर वे बड़े हैं, धर्मवाले हैं और सन्मार्ग पर मार्गदर्शन दे सकते हैं—ऐसी देवबुद्धि अनुभवों द्वारा दृढ़ होती है। महाराज को अवतारों के अवतारी समझकर, सर्वोपरि, दिव्य, साकार जानकर सेवा-भक्ति करते-करते ऐसे सत्पुरुष के सत्संग से जीवात्मा संसारयुक्त मुमुक्षुता प्राप्त करता है। सद्भावना बढ़ती जाती है। साधु के पास जाया करने की ओर वृत्तियाँ खींची रहती हैं। धार्मिक उत्सवों में जाया करने का मन होता है। फिर भी दोष रहते हैं, कल्पना रहती है, संशय होया करते हैं और सत्संग जैसा है वैसा पहचाना नहीं जाता। दिव्यभाव नहीं रह पाता। नियम में रहकर संसार की प्रवृत्तियाँ करते-करते जितना हो सके उतना सत्संग करते रहते हैं। स्वयं की देह में जैसी आत्मबुद्धि है और सगे-सम्बन्धियों में जैसी प्रीति है, वैसी सच्चे संत और सत्संगियों में नहीं हो पाती। एकांतिकभाव सिद्ध करना शेष रहता है।

निष्कामभाव व निष्कपटरूप से भगवान या उसके संत का समागम जैसे-जैसे होता जाता है, वैसे-वैसे शुद्धभाव विकसित होता जाता है। मन काबू में आते एकाग्रता बढ़ती है। महाराज की मूर्तिरूपी सत्शास्त्र व संत के वचन से महिमा समझने पर स्वरूपनिष्ठा दृढ़ होती जाती है और जीवात्मा शिवरूप बनकर एकांतिक के लक्षणयुक्त वर्तता है व उपासना एवं आज्ञा दृढ़ करता है। ग्यारह नियम में रहकर सच्चे ब्रह्मस्वरूप संत द्वारा महाराज व स्वामी के प्रति जिसकी निष्ठा सिद्ध करी हुई हो उसे ब्रह्मरूप होने में थोड़ी भी देर नहीं लगती। **ब्रह्मभाव से संत का समागम करने से उस पर संत की कृपा होती है और तब ही वासना जीती जाती है।** दोष टलते जाते हैं और आत्मा व देह, नादसृष्टि व बुंदसृष्टि अलग होते हुए जीवात्मा भिन्न-भिन्न गतिओं से परमात्मा के अनुसंधान से सत्पुरुष द्वारा—गुरुरूप हरि द्वारा ही एकांतिकभाव सिद्ध करके अनन्यभक्त बनता है। उसे दूसरों के दोष, क्षतियाँ, त्रुटियाँ, नजर में ही नहीं आती। अखंड दिव्यभाव ही रहता है और दोष रहित होकर निर्मानीभाव से—ब्रह्मरूप की भावना दृढ़ करके सत्संग की सेवा तथा महाराज की भक्ति अखंड करता रहता है। फिर भी निर्गुणभाव दृढ़ नहीं होता। महाराज एवं मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी व उनके साधर्म्य को पाये, अखंड निर्विकल्पभाव से अलौकिक स्थिति में रहने वाले महाएकांतिक परम भागवत संतों में दृष्टि पहुँचती नहीं। परिस्थिति में फर्क आने पर माया का प्रवेग—साम्यावस्था रूप माया विक्षिप्त दशा में गिरा देती है और प्रत्यक्ष विचर रहे अतिशय बड़े प्रगट सत्पुरुष के प्रति भी न्यूनभाव ला देती है और उनमें मनुष्यभाव आ जाता है।

श्रीजी महाराज ने भी कहा है—अनादि भावमुक्त हो, स्वतंत्ररूप से आया हुआ हो और स्वतंत्र जा भी सकता हो फिर भी सत्पुरुष या संतों के समागम बिना ऐसा मुक्त भी जड़ संज्ञा को पा जाता है। सो कुसंग तो करना ही नहीं। वच. अंत्य. 16-24 वगैरा में महाराज ने बताया है कि पू. गोपाळानंदस्वामी,

पू. मुक्तानंदस्वामी, पू. दादाखाचर तथा बड़ी-बड़ी सांख्ययोगी बहनें भी यदि निरन्तर सत्संग नहीं रखेंगी तो परिस्थितियाँ बदलने पर मुक्तभाव से गिर जायेंगे और निम्नकोटि के भी रहें या नहीं, इसका भरोसा नहीं दिया जा सकता। यह मूल माया के बल की बात है। सो ही महाराज ने अतिशय सूक्ष्मभाव से –सनातन दिव्य तीनों तत्त्व जो कि आत्यंतिक प्रलय के अन्त में रहते हैं और आत्यंतिक मुक्ति जिसे मानते हैं उसमें अनादि अद्वितीय मूल अक्षर की अनिवार्यता अनिर्वचनीय स्वरूप की बताई है। मूलअक्षर गुणातीतानंदस्वामी के साध्म्र्यपन के बिना, मूल अनादि ब्रह्म के मनन द्वारा संग बिना पूर्ण पुरुषोत्तम को धारा ही नहीं जा सकता। सनातन धाम के सिद्धान्त को यह प्रतिपादित करता है। सच्चे संत या साधु की दृष्टि हुए बिना माया से अखंड निर्लेपभाव रहता ही नहीं। ऐसी दृष्टि को ही सिद्धान्तिक प्रसन्नता महाराज ने गिनी है।

जब प्र.ब्र. शास्त्रीजी महाराज या प्र.ब्र. योगीजी महाराज जैसे गुरुवर्य की दृष्टि जीवात्मा पर पड़ती है, तब वह निर्वासनिक होकर, सब दोषों, विकारों से–सर्व राग द्वेषात्मक द्वंद्वों से रहित होकर, मूल साक्षात् स्वरूप में गति करता है। धाम का सुख, आनंद, बल, प्रभा स्वयं प्राप्त करके शिवरूप में से परम शिवरूप देह रहते हुए बनकर वच.सा. 10-अंत्य. 28, लोया–7, का.1,7 तथा प्र.प्र.1 के मुताबिक साक्षात्कार की ब्रह्मस्वरूप स्थिति अनुभव करता है और भोगताहै। **कारण शरीररूप जीव की माया तथा साम्यावस्थारूप प्रकृति की माया अदृश्य होती है और पुरुषोत्तम रूप बनकर भी उसे महाराज व स्वामी पर के पर लगते हैं और अमृत का समुन्दर समान अक्षरधाम का साक्षात् सुख देह रहते हुए प्राप्त करता है।** चैतन्यमय ही दृष्टि हो जाती है। सारा सत्संग दिव्य ही दिखाई पड़ता है। दृढ़ धर्म में रहकर वच. अत्यं 39 के मुताबिक आत्मा-परमात्मा का अतिशय दृढ़ रटन हुआ करता है और बुरे संकल्प उठते ही नहीं। अनंत पतित जीवों को वह माया से पार कर सकता है। माया से अखंड निर्लेपभाव, निर्विकारभाव अनुभव करके निरंतर स्थिथप्रज्ञता सिद्ध करता है। **लोया 12 के निर्विकल्प निश्चय के आधार पर साक्षात्कार की सर्वोत्कृष्ट स्थिति साक्षात् स्वरूपों की दृष्टि से ही प्राप्त करता है।** दिव्य साकाररूप की कृतकृत्यता, पूर्णता के अनुभव की प्रतीति अखंड सहजभाव से, स्वाभाविक रीत से ही रहा करती है। ऐसी गुणातीत स्थिति महाराज, स्वामी या साक्षात् सच्चे संत की दृष्टि के बिना प्राप्त हो ही नहीं सकती। मुक्तभाव की यह सीमाडोरी है। महाराज उसके वश वर्तते हैं। समग्र सत्संग को दिव्य समझकर, माया से निर्लेप रहकर फिर भी दासभाव से ही वह भक्त एकांतिक संत के लक्षणयुक्त अनन्य भक्ति करके अखंड आनंद अनुभव करता है और दूसरों को भी गुणातीत करता है। ऐसे महामूल्य रत्नों पू. योगीजी महाराज तैयार कर रहे हैं और उनकी अखंड दृष्टि समग्र सत्संग पर रहे यही अभ्यर्थना है। संस्कारिता, मुमुक्षुता, आशीर्वाद, कृपा और सच्चे संत की दृष्टि के मुताबिक–यूं स्थिति और स्थानों के भेदों मुक्तों में दिखाई पड़ता है और दूसरों को भी प्रतीति होती है। यह अनुभव से पता चलता है।

**–प.पू. काकाजी महाराज**

जुलाई 1953

❋ ❋ ❋ ❋

**( ब )**

.....प्रामाणिकता और निष्कपटभाव से सत्पुरुष के पास जितना विनयपूर्वक वर्ता जाये उतना बल अधिक मिलता है। पू. बापा का संबंध हुआ–तो उनकी अपरम्पार सत्ता का ही विचार करोगे, तब भी किसी का भी जरा भी देखना–करना, कहना या चुभना रहेगा ही नहीं। यह अनिवार्य शर्त ही है। दिल की सच्चाई से करने वाला हो तो चाहा परिणाम आता ही है।

**–प.पू. काकाजी महाराज**

12-2-'68

❑ ❑ ❑

# सरलता व सादगी के सम्राट प.पू. पप्पाजी के सान्निध्य में

करोड़ों जन्मों की अहंता, ममता, जड़ता से लिप्त अमावस्या की काली रात में अखंड ज्योति प्रगटाने ही गुणातीत स्वरूपों ने हमारे जीवन में पदार्पण किया है....सो चैतन्यों को नई सूझ देने, मुक्तों को अपने दर्शन, सेवा, समागम का सुख देकर चिरंजीव स्मृतियाँ देने, अत्यधिक करुणा करके प्र.ब्र.स्व.प.पू. पप्पाजी 25th Oct.'92 अर्थात् दीवाली की रात को ही साढ़े ग्यारह बजे दिल्ली एयरपोर्ट पर पधारे.....

संतमंडल व बहनें प.पू. पप्पाजी के स्वागत में भक्ति अदा करने की भावना से एयरपोर्ट पर पहले ही पहुँच गये थे। दीवाली के कामों की व्यस्तता से खूब थके होने के बावजूद भी प.भ. मल्कानी साहब व परिवार प.पू. पप्पाजी को receive करने एयरपोर्ट आये थे। प.पू. पप्पाजी का fresh व मुस्कुराता चेहरा देखकर सभी के आनंद का पारावार न रहा....वैसे भी दीवाली व भैयादूज के दिन विद्यानगर छोड़कर प.पू. पप्पाजी का दिल्ली पधारना–वही एक आश्चर्यजनक घटना बनकर सभी के दिलो-दिमाग पर छाई हुई थी.....

एयरपोर्ट से प.पू. पप्पाजी सीधे प.भ. मल्कानी साहब के घर गये.....वहाँ आधा घंटा दर्शन का सुख दिया.....खूब Late होने के कारण प.पू. पप्पाजी ने रात को प.भ. मल्कानी साहब के यहाँ ही आराम किया।

अगले दिन सुबह नूतन वर्ष व अन्नकूट....सुबह 10.30 पर प.पू. पप्पजी नवनिर्माणाधीन मंदिर के प्रांगण में पधारे....भक्त समुदाय तो जैसे राह देखकर ही बैठा था। आनंद व उल्लास हरेक के मुख पर दिखाई पड़ता था.....नूतन वर्ष की पहली सुबह में स्थूल रूप में प्रगट प्रभु का अपने आंगन में दर्शन का सौभाग्य कहाँ से? प.पू. पप्पाजी सभामंडप में पधारे। तालियों की गड़गड़ाहट से सबने स्वागत किया। भजन-पूजन विधि के पश्चात् प.पू. पप्पाजी ने खूब आशीर्वाद बरसाते हुए कहा–**काकाजी ने आध्यात्मिक क्रांति की....गुरुजी ने काकाजी को अमर कर दिया, काकाजी गये ही नहीं हैं, वे गुरुजी में हैं ही....जिस दिन काकाजी ने शरीर छोड़ दिया उस दिन वे गुरुजी में प्रवेश हो गया....मैं उसका साक्षी हूँ....काकाजी का एक ही सिद्धान्त था–निर्दोषबुद्धि.....काकाजी, पू. गुरुजी की स्मृति के साथ लय व लीन होकर भजन करना....काकाजी ने जो सुख दिया था वही सुख गुरुजी दे रहे हैं....** प.पू. पप्पाजी की परावाणी मानो भक्तों के सीधे

हृदय में उतर रही थी और नयी उमंग, नया उत्साह व बल दे रही थी।

प.पू. पप्पाजी के आशीष के बाद निवनिर्माणाधीन मंदिर के पीछे परिक्रमा हेतु बनाए गए 'स्मृतिस्थल' में स्थापित किये जाने वाला अस्थिकुंभ प.पू. पप्पाजी के वरद्हस्तों से पूजन विधि कराने के लिए लाया गया। सभी की आँखें अपने प्यारे प्रभु प.पू. काकाजी की स्मृति करके नम हो गई। सर्वप्रथम प.पू. पप्पाजी ने अस्थिकुंभ का चंदन से पूजन किया.....फिर पू. गुरुजी, प.भ. मल्कानी साहब व भक्तों ने पूजन विधि की... उसके बाद पू. ज्योति बहन, पू. आनंदी दीदी व अन्य बहनों ने कलश का पूजन किया। तत्पश्चात् प.पू. पप्पाजी, संतमंडल भगवाधारी बहनें व भक्त समुदाय 'स्मृतिस्थल' पर पहुँचा.... प.पू. पप्पाजी ने अस्थिकुंभ पधराया.....पू. गुरुजी पर गुलाब के फूलों की पुष्पवृष्टि की....यह दृश्य अत्यधिक मार्मिक था.... हरेक के दिल से मानो अपने आप प्रार्थना निकल रही थी–हे काकाजी ! आपने सारा जीवन योगीजी महाराज के अल्प संबंध वालों में खोकर बिना कोई अपेक्षा रखे स्वयं की कुर्बानी दी.....हम भी आपके सिद्धान्तों को ही अपने जीवन का लक्ष्य बनायें.....

इस विधि के पश्चात् प.पू. पप्पाजी अन्नकूट की आरती के लिए पधारे....सब भावविभोर होकर प.पू. पप्पाजी को आरती उतारते देख रहे थे...क्योंकि यह दर्शन तो जीवनभर की चिरंजीव स्मृति के लिए था। आरती के बाद प्रसाद व विसर्जन....

26th की शाम को प.पू. पप्पाजी पू. नवल बा की भावना ग्रहण करने Gujarat Apts. गये...रात को वहीं आराम किया। सुबह नए हरिभक्तों को दर्शन, सेवा, समागम का सुख देकर अशोकविहार मंदिर आये। यहां हरिभक्तों के घर पधरामनी की.... शाम को प.पू. पप्पाजी के सान्निध्य में भैयादूज की सभा का आयोजन था। सभी ने प.पू. पप्पाजी का लाभ लिया सभा के बाद रात को प.पू. पप्पाजी व बहनें प.भ. मल्कानी साहब के farmhosue की ओर जाने निकले....

प.पू. पप्पाजी व बहनों के आगमन से मल्कानी साहब के farmhouse का हरेक पौधा, रज स्वयं की धन्यता पर झूम उठा.....प.पू. पप्पाजी तीन-चार दिन अत्यधिक आराम से रहे.....रोज सुबह संघ ध्यान, आरती करके अपनी परावाणी का लाभ देते.... farmhouse का round लेते। पूरा farmhouse मानो स्वामिनारायण-स्वामिनारायण की रटना लिए....'अक्षरधाम' रूप लग रहा था। सबसे अधिक आनंद की बात यह हुई कि प.पू. पप्पाजी की तबीयत एकदम अच्छी रही.... प.भ. मल्कानी साहब के सेवकभाव को देखकर तो हरेक का दिलो दिमाग नतमस्तक हो जाता....जितने दिन प.पू. पप्पाजी farmhouse पर रहे. प.भ.मल्कानी साहब अपने कारोबार की सारी प्रवृत्ति बंद करके दिन-रात वहां सेवक की अदा से ही रहे....प.पू. पप्पाजी तो प.भ. मल्कानी साहब की अजोड़ सेवा भक्ति देखकर बोले : **'मल्कानी सारे गुणातीत समाज के लिए आदर्श पात्र....सभी गुणातीत स्वरूपों के प्रति एक सरीखा ही पूज्यभाव रखकर सभी के दिल की प्रसन्नता उन्होंने पा ली है।'**

31st Oct.'92 तक प.पू. पप्पाजी farmhouse पर ही रहे....दिल्ली के भक्तों को अब की बार प.पू. पप्पाजी को खूब नजदीक से निहारने का मौका मिला.....प.पू. पप्पाजी की अत्यधिक सरलता व सादगी सभी के दिल को छू गई.....

31st की रात को प.पू. पप्पाजी दिल्ली से ट्रेन द्वारा इलाहाबाद के लिए निकले....वहां इलाहाबाद में प.भ. के.सी.सींग साहब के नये घर पर महापूजा करके मंदिर में मूर्तिप्रतिष्ठा की.....वहां त्रिवेणी संगम पर गये...गंगा को तीर्थत्व प्रदान किया....वहां से छपैया परम तीर्थधाम महाराज के जन्म स्थान पर दर्शन करने गये। इलाहाबाद–छपैया की यात्रा करके

5th Nov.'92 की सुबह दिल्ली वापिस आये और प.भ. मल्कानी साहब के farmhouse पर ही रुके.....5th Nov.'92 की दोपहर को farmhouse पर सत्संग की सभा थी....80 जितने हरिभक्तों ने सत्संग का लाभ लिया व प.पू. पप्पाजी ने खूब आशीर्वाद दिए–

प.पू. पप्पाजी के सान्निध्य में तो दिन, तारीख का कुछ याद ही नहीं रहता था। मानो समय रुक गया था और 6th Nov. प.पू. पप्पाजी के वापिस गुजरात जाने का दिन भी आ गया। 6th Nov. की शाम को प.पू. पप्पाजी को एयरपोर्ट छोड़ने संतमंडल, बहनें, प.भ. मल्कानी साहब व परिवार एवं भक्तों का समुदाय पहुँच गया....प.भ. मल्कानी साहब एयरपोर्ट पर प.पू. पप्पाजी के हाथ से प्रसाद दिलवाने के लिए पेड़े की थाली जो बनाकर ले आये थे....उसे लेकर प.पू. पप्पाजी के पास एक सेवक की अदा से खड़े रह गये ! मल्कानी साहब की यह भावना और विनम्रता को देखकर सभी के मुख से धन्यवाद-धन्यवाद निकल पड़ा....प.पू. पप्पाजी ने सभी को पेड़े का प्रसाद दिया.....व सभी से विदाई ली.....हरेक ने भावविभोर हृदय व नम आँखों से प.पू. पप्पाजी को विदाई दी व भीतर में प.पू. पप्पाजी द्वारा दी अगणित स्मृतियों का खजाना लेकर प्रार्थना करते हुए लौटे कि अहो हो ! गुणातीतस्वरूपों की कैसी करुणा ? बस अब इनकी मर्जी के मुताबिक जीवन जीकर उन्हें हाश कर देनी है।

–सम्पादक
**पू. भाईस्वामी**

❑ ❑ ❑

# 'पू. काकाजी मेरी—निगाह से'

❑ पू. काकाजी ने 'स्वरूपयोग' की आदत डलवाई। लय लीन होकर धून करने की आदत डलवाई। उनकी स्वरूपयोग की प्रार्थना और धून के ब्रह्मनाद की स्मृति आज भी मुर्दे खड़े कर देती है। हमें भगवान की स्मृति करा दें वैसे थे।

**–प.पू. बा**
विद्यानगर

❑ अहो हो ! प.पू. काकाजी यानि–'नायगरा' के धोध समान निरपेक्ष
करुणा वात्सल्य लुटाने वाली
अनोखी 'दिव्य माँ' !

❑ प.पू. काकाजी कहते थे–
मेरा नाम दा.....दु–यानि दो हाथ से देने वाला !
सो, जीवनभर उन्होंने किसी से कुछ लिया नहीं,
बस देते ही रहे–देते ही रहे !
क्या ?
मुफ्त में प्रभु की मूर्ति !!

**–पू. आनंदीदीदी**
दिल्ली

❑❑❑

# स्वामी की बातें

267. स्वामी ने सत्पुरुष की जो महिमा बताई वह बात :-वे बड़े हैं, भगवान इनमें समाये हैं, भगवान के वचन में वर्तते हैं, कसनी सहते हैं, भगवान इनके वश है। वे कहें वैसे भगवान करते हैं–फिरते हैं, भगवान को उन्होंने जीती है, भगवान के अभिप्राय को जानने वाले हैं, मोक्ष के दाता हैं, उनके दर्शन से भगवान का दर्शन हो जाता है, उनके पूजन से भगवान का पूजन हो जाता है। गर्भवास, यमपुरी व चौरासी के दुःख से छुड़ाते हैं और अत्यंत दुर्लभ जो भगवान का अक्षरधाम है वह हमें देते हैं। भगवान के साधर्म्य की प्राप्ति कराते हैं ऐसे वे बड़े हैं। उनके बिना भगवान को चलता नहीं, उनके दर्शन से पंच महापाप खाक हो जाते हैं। उनकी इन्द्रियों की क्रियाओं द्वारा ब्रह्माण्ड सचेतन होता है। उनसे काल, कर्म, माया थर-थर काँपते हैं। जैसे देह को पूजने से जीव का पूजन हो जाता है, वैसे ही इस साधु के पूजन से भगवान का पूजन हो जाता है। वे अन्नदाता हैं, अन्तर्यामी हैं, सर्वज्ञ हैं। इनका किया होता है और वे मनुष्य जैसे दिखाई पड़ते हैं। परन्तु मनुष्य जैसे नहीं है। भगवान उनमें रहे हैं। अविनाशी धाम की प्राप्ति कराते हैं। कर्ता होते हुए भी अकर्ता हैं। वृक्ष की भाँति उनका देह दूसरों के लिए है। संत के जो लक्षण कहे गए हैं, वैसे वे हैं। कामिल, काबिल सब हुनर तेरे हाथ, ऐसे समर्थ हैं। इस प्रकार महिमा समझने कहा है। *प्र–4, 143*

268. भगवान मिलने के बाद करना यह है कि सतर्क रहना तथा संग पहचानना और हठ, मान व ईर्ष्या छोड़नी। *प्र–5, 1*

❑ ❑ ❑

## व्रतोत्सवसूची

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1. | दि. | 6.12.92 | रविवार | मोक्षदा एकादशी, व्रत |
| 2. | दि. | 9.12.92 | बुधवार | पूर्णिमा |
| 3. | दि. | 16.12.92 | बुधवार | धनुर्मास प्रारंभ |
| 4. | दि. | 20.12.92 | रविवार | एकादशी, व्रत |

**PUBLISHED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,**
A 103, Ashok vihar-III, Swaminarayan Marg, Kakaji Lane,
Delhi-110 052. (India) Tel. : 7229327, 7249327
Printed at Kamal Printers, IX/5866, Gandhi Nagar, Delhi-110 031